पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
डा. सुधा दुबे

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – डा. सुधा दुबे

बढ़ती भीड़, टूटते रिश्ते

बढ़ती भीड़, टूटते रिश्ते

“कभी घर छोटे थे, पर दिलों में जगह बहुत थी; आज घर बड़े हैं, कमरे अलग हैं और दिलों में दूरी बहुत है।”

यह हमारे समय की सबसे विचित्र विडंबना है कि दुनिया जितनी सिमटती जा रही है, मनुष्य उतना ही अनेक होता जा रहा है। शहरों की सड़कें भीड़ से भरी हैं, बाजारों में चहल-पहल है, रेलगाड़ियों और मेट्रो में लोगों का सैलाब है, सोशल मीडिया पर हजारों मित्र हैं, मोबाइल में सैकड़ों संपर्क हैं—फिर भी मन के भीतर एक ऐसा खालीपन बढ़ता जा रहा है, जिसे भीड़ भर नहीं पा रही।

हमारे आसपास लोग बढ़े हैं, लेकिन अपने घटे हैं। संपर्क बढ़े हैं, लेकिन संवाद घटा है। सुविधाएँ बढ़ी हैं, लेकिन सुकून घटा है। सूचनाएँ बढ़ी हैं, लेकिन संवेदनाएँ घटती जा रही हैं।

यही हमारे वर्तमान समय का सबसे बड़ा सामाजिक विरोधाभास है—बढ़ती भीड़ और टूटते रिश्ते।

भीड़ केवल सड़कों पर नहीं बढ़ी

जब हम ‘भीड़’ शब्द सुनते हैं तो हमारे सामने महानगरों की व्यस्त सड़कें, बाजार, स्टेशन और कार्यालय दिखाई देते हैं। लेकिन आज भीड़ केवल बाहर नहीं बढ़ी है; उसने हमारे जीवन के भीतर भी अपना स्थान बना लिया है।

हम लगातार किसी न किसी से जुड़े हुए हैं। मोबाइल की स्क्रीन पर संदेशों की कतार लगी रहती है। सामाजिक माध्यमों पर तस्वीरें, विचार, प्रतिक्रियाएँ और शुभकामनाएँ आती-जाती रहती हैं। जन्मदिन पर सैकड़ों लोग संदेश भेज देते हैं, लेकिन उसी व्यक्ति के पास बैठकर उसके मन की बात सुनने वाला शायद कोई नहीं होता।

पहले किसी रिश्तेदार का हाल जानने के लिए घर जाना पड़ता था। रास्ते में समय लगता था, लेकिन उस यात्रा में अपनापन मिलता था। आज एक संदेश से हाल पूछा जा सकता है, एक इमोजी से भाव व्यक्त किया जा सकता है और एक वीडियो कॉल से चेहरा देखा जा सकता है। सुविधा बढ़ी, समय बचा—लेकिन क्या आत्मीयता भी उतनी ही बढ़ी?

तकनीक ने दूरी घटाने का साधन दिया, पर हमने उसे कभी-कभी संबंधों के स्थानापन्न के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

मुख्य समस्या यही है-

घर एक छत है, परिवार नहीं

परिवार कभी केवल रक्त-संबंधों का समूह नहीं था। परिवार वह स्थान था जहाँ मनुष्य अपनी सफलताओं का उत्सव और अपनी असफलताओं का दुख बाँट सकता था। दादी की कहानी, दादा का अनुभव, माँ की चिंता, पिता का अनुशासन, भाई-बहन की नोकझोंक इन सबके बीच जीवन की अनौपचारिक पाठशाला चलती थी।

आज अनेक घरों में सभी सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हुए भी अपनी-अपनी डिजिटल दुनिया में व्यस्त हैं।

एक कमरे में बैठा पिता मोबाइल पर समाचार देख रहा है। माँ किसी वीडियो में व्यस्त है। बच्चे अपने-अपने उपकरणों पर हैं। भोजन की मेज पर खाना मौजूद है, लोग भी मौजूद हैं, लेकिन बातचीत अनुपस्थित है।

यह दृश्य किसी एक परिवार की कहानी नहीं है। आधुनिक जीवन की यह एक व्यापक प्रवृत्ति बनती जा रही है।

कभी परिवार में प्रश्न होता था

"आज दिन कैसा रहा?"

अब प्रश्न होता है

"वाई-फाई चल रहा है?"

कभी बच्चे माता-पिता के पास बैठकर अपनी बातें बताते थे। अब वे अपनी भावनाएँ किसी स्क्रीन के पीछे छिपाकर रखते हैं। कभी बुजुर्ग घर के केंद्र में होते थे; आज कई बार वे घर में उपस्थित होकर भी भावनात्मक रूप से अकेले हैं। ना पार्क में भीड़ है ना घर में भीड़ में रहते हुए भी अकेले।

तकनीक दोषी नहीं, हमारा इस्तेमाल दोषी है

यह कहना उचित नहीं होगा कि तकनीक स्वयं रिश्तों की दुश्मन है। तकनीक ने मानव जीवन को असंख्य सुविधाएँ दी हैं। दूर बैठे परिवार के सदस्य को एक क्षण में देखा और सुना जा सकता है। शिक्षा, चिकित्सा, संचार और ज्ञान के क्षेत्र में तकनीक ने अभूतपूर्व संभावनाएँ पैदा की हैं।

समस्या तकनीक नहीं है; समस्या तब उत्पन्न होती है जब तकनीक साधन से बढ़कर जीवन का स्वामी बन जाती है।

मोबाइल हमें जोड़ने के लिए था, लेकिन कई बार वह हमारे बीच दीवार बन जाता है।
एक परिवार साथ बैठा है, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति किसी दूसरे संसार में है। कोई सामाजिक माध्यम पर किसी अनजान व्यक्ति के जीवन में झाँक रहा है, कोई वीडियो देख रहा है, कोई खेल खेल रहा है और कोई लगातार संदेशों का उत्तर दे रहा है।
हमारी उँगलियाँ स्क्रीन पर बहुत सक्रिय हैं, लेकिन हमारे हाथ अपने प्रियजनों के कंधों पर रखने के लिए खाली नहीं हैं।
हम 'ऑनलाइन' हैं, पर भावनात्मक रूप से ऑफलाइन होते जा रहे हैं।
अकेलापन-भीड़ के बीच खड़ा हुआ मनुष्य
अकेलापन आज की सबसे गहरी सामाजिक पीड़ाओं में से एक है। यह आवश्यक नहीं कि अकेला वही व्यक्ति हो जिसके आसपास कोई नहीं है। कभी-कभी व्यक्ति परिवार, मित्रों और परिचितों के बीच रहकर भी अकेला हो सकता है।
अकेलापन तब जन्म लेता है जब मनुष्य को यह महसूस होने लगे कि उसे समझने वाला कोई नहीं है।
उसके पास कहने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन सुनने वाला कोई नहीं।
उसके पास सफलता है, पर उसे बाँटने वाला अपना नहीं।
उसके पास दु:ख है, पर उसे समझने वाला विश्वासपात्र नहीं।
यही कारण है कि आधुनिक मनुष्य का सबसे बड़ा संकट कभी-कभी आर्थिक नहीं, बल्कि भावनात्मक होता है।
वह भीड़ में चलता है, मुस्कुराता है, काम करता है, तस्वीरें खिंचवाता है और सामाजिक जीवन का हिस्सा दिखाई देता है लेकिन भीतर से वहओो
किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में होता है जिसके सामने उसे अभिनय न करना पड़े।
मनुष्य को भीड़ नहीं अपनापन चाहिए।

डा. सुधा दुबे

****

लेखक परिचय

नाम – डा. सुधा दुबे
निवास – कोटरा रोड भोपाल

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**डा. सुधा दुबे**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...